ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 105-106**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

श्रीमती महादेवी वर्मा का नारी चिन्तन

डॉ0 कौशलेन्द्र मिश्रा

असिस्टेन्ट प्रोफेसर–हिन्दी विभाग, बी0 बी0 एम0 बी0 जी0 कन्या महाविद्यालय, बिहटा, पटना (बिहार) भारत

Received-06.02.2025, Revised-14.02.2025, Accepted-20.02.2025 **E-mail : kaushalendramishra20@gmail.com**

***सारांशः** महादेवी जी और उनका नारी चिन्तन : 'स्त्री साहित्य' धारणा से भिन्न है। स्त्री साहित्य वस्तुतः स्त्री की अनुभूति का साहित्य है। यह ऐसी अनुभूतियाँ है, जो अभी तक दबी हुई थी, दमित थी, उत्पीड़ित थी। प्रभुत्वशाली पुरूषवादी समूह ने उसे समाज एवं साहित्य से बहिष्कृत रखा। स्त्री को कुछ खास क्षेत्रों तक कार्य करने की अनुमति दी गई। वह प्रतिबंधित क्षेत्र से बाहर निकलने की कोशिश की पुरूष की सत्ता को इससे खतरे का अहसास हुआ। पितृसत्ता की व्यवस्था कमजोर हुई, पुरूष वर्चस्व में खरोंच लगी। प्रतिबंधित दायरे से बाहर निकलकर स्त्री ने अपने को समग्रता में मानवीय कार्य व्यापार से जोड़ने की कोशिश की। ऐसी अवस्था में ही पुरूष समूह में स्त्री की देख–भाल करने का भाव पैदा हुआ।*

***कुंजीभूत शब्द–** नारी चिन्तन, स्त्री साहित्य, अनुभूति, उत्पीड़ित, प्रभुत्वशाली पुरूषवादी, बहिष्कृत, पितृसत्ता, पुरूष वर्चस्व*

पुरूष साहित्य में स्त्री चरित्रों में जिन मूल्यों एवं टेबुओं का रूपायन मिलता है वहाँ पर स्त्री को समानता के लिए संघर्ष भूल प्रतीत होता है। कभी–कभी यह भी लगता है कि स्त्रियाँ सभ्यता के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पा रही है। 'स्त्री साहित्य' में ऐसी रचनाएँ भी मिलेंगी जो राजनीति से पृथक है, सिर्फ स्त्री के अनुभवों को व्यक्त करती है। ये रचनाएँ किसी भी विषय पर हो सकती है। फलतः स्त्री रचित होने के कारण ये सभी रचनाएँ स्त्री साहित्य का अंग है। स्त्री की व्यक्ति के रूप में अस्मिता को स्थापित करना, उसकी संवेदनाओं, भावों एवं विचारों को अभिव्यक्ति देना स्त्री साहित्य का बुनियादी दायित्व है। साहित्य के माध्यम से सामाजिक विषमताओं एवं लिंगभेदीय असमानताओं के उद्घाटन में महत्वपूर्ण मदद मिलती है।

ज्ञानपीठ पुरस्कृत हिन्दी की सुविख्यात कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा बीसवीं शताब्दी की भारतीय नारी की सम्पूर्ण गरिमा का प्रतीक थी। यह गरिमा उन्होंने भारतीय नारी की असीम दारूण व्यथा को भोगकर, देखकर और उससे उभरकर एक विवेक सम्पन्न दृष्टि विकसित करने से भी प्राप्त की थी। महादेवी जी का जीवन एक व्यक्तित्व सम्पन्न भारतीय नारी तथा पुरूष प्रधान समाज के कठोर जड़ संस्कारों की टकराहट की कहानी है। उनके साहित्य में जहाँ नारी के दुःख का गहरा रेखांकन है वहीं जीवन में पुरूष का प्रबल नकार भी हैं उनमें नारी की तत्कालीन स्थिति के प्रति विद्रोह तो है पर वह इतना अन्तर्मुखी है कि टीस बनकर ही फूट पाता है अंगारा बनकर धधकता कहीं नहीं।

भारतीय नारी के शोषण, तिरस्कार, पराधीनता और इन सबसे बने उसके पीड़ामय व्यक्तित्व की जो स्वीकारोक्ति उनकी कविता में फुटी है यह हिन्दी ही नहीं विश्व कविता की अमूल्य निधि है:

विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली।
मैं नीर भरी दुःख की बदली।

इस विस्तृत समाज रूपी नभ पर तो पुरूष अपना एकाधिकार जमाये हुए हैं और ऐसी तानाशाही मुद्रा से अधिकार जमाये हुए हैं कि पुरूष के इस विस्तृत नभ का कोई एक कोना भी कभी उसका होने वाला नहीं है। महादेवी जी का कविता टीस, उच्छवास और आँसुओं से भरी पड़ी है। उनके सभी गीतों में एक अवसाद और एकाकी सूनापन है, एक गहारी निराशा है जो किसी दर्शन के बहाने अनायास एक रहस्यमयी आशा में परिणत होती नजर आती है।

जीवन पथ का दुर्गमतम तल,
अपनी गति से कर सजल सरल,
शीतल करता युग तृषित नीर।
प्रिय इन नयनों का अश्रु नीर।

नारी जीवन की पीड़ा को अभियव्यक्त करने में ही उनकी कविता की श्रेष्ठता है। वस्तुतः भारतीय नारी की पीड़ा के इस एहसास में ही उनके नारी चिन्तन का अंकुर छिपा हुआ है।

महादेवी वर्मा नारी के दुःख को व्यक्त करने में काफी अप्रत्यक्ष रही है, इसलिए वे हमें रहस्यवादिता, दार्शनिकता तथा आत्मा–परमात्मा के विरह–मिलन की गूढ विधिकाओं में भरमा ले जाती हैं। वहाँ नारी के दुःखों को सीधे पकड़ पाना मुश्किल हो जाता है किन्तु उनके द्वारा खींचे गये विभिन्न नारियों के रेख चित्रों में नारी की दुस्सह पीड़ा और पुरूष प्रधान समाज के प्रति उनका प्रबल विरोध बहुत प्रत्यक्ष और स्पष्ट है। उनके रेखा चित्रों पर विचार करें तो हमें कई बातें स्पष्ट नजर आती हैं। एक तो यही कि उनके अधिकांश रेखा चित्र नारियों के हैं, प्रताड़ित हैं तथा अत्यन्त हेय–दयनीय जीवन जी रही है। तीसरी बात यह है कि उनके दुःख का कारण या तो सीधे ही पुरूष है अथवा पुरूष प्रधान समाज के संस्कार में पली–बढ़ी तथा नारी के प्रति क्रूर बनी अन्य नारियाँ।

'भाभी' नामक रेखा चित्र में भाभी एक मारवाड़ी बाल विधवा है जो विधवा होने के कारण घर में बन्द रहती है, एक समय भोजन करती है और अपनी ननद द्वारा मारी पीटी जाती है। बालिका महादेवी द्वारा रंगीन ओढ़न उढ़ा देने पर वृद्ध ससुर और ननद द्वारा इतनी पीटी जाती हे कि उस क्रूरता को देखकर स्वयं लेखिक बीमार पड़ जाती है। इस दारूण स्थिति के बारे में उन्होंने लिखा है कि फिर मैंने उसे देखा, तब उन बचपन भरी आँखों में विषाद का गाढ़ा रंग चढ़ चुका था और वे ओठ जिन पर किसी दिन हँसी छिपी सी जान पड़ती थी ऐसे काँपते थे मानो भीतर का क्रन्दन रोकने के प्रयास से थक गये हों। इस एक घटना से बालिका (अर्थात् भाभी) वृद्धा हो गई।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

'बिन्दा' रेखा चित्र को सौतेली माँ का भरपूर क्रूर व्यवहार मिला। उसमें बिन्दा की दारूण व्यथा तो अंकित है ही साथ ही सौतेली माँ पंडिताइन चाची के इतना कठोर हो जाने की विडम्बनीय कथा भी है जो पुरूष प्रधान समाज में नारी की अपनी प्रति असुरक्षा की आशंका का ही परिणाम है।

'सबिया' एक पति परित्यकता उपेक्षित और प्रताड़ित नारी हैं पति दूसरी स्त्री को साथ रखने लगता है तब भी वह उसे क्षमा कर देती है। उसी सबिया पर चोरी का इलजाम लगाये जाने पर महादेवी जी पूरे समाज को ही कटघरे में खड़ा कर देती है। वे कहती हैं कि "समाज ने स्त्री मर्यादा का जो मूल्य निश्चित कर दिया है, केवल वही उसकी गुरूता का मापदण्ड नहीं। स्त्री की आत्मा में उसकी मर्यादा की जो सीमा अंकित रहती है, वह समाज के मूल्य से अधिक गुरू और निश्चित है।" लेखिका ने नारी की कर्मशीलता में एक पुरूष निरपेक्ष साधना को स्थान दिया है, इसलिए नारी अपने लक्ष्य और व्यवहार दोनों में पुरूष से काफी ऊँची उठ जाती है। वह अपने आपको पुरूष की तुलना में गुणात्मक रूप से भिन्न स्थापित कर देता है।

'बिट्टो' रेखा चित्र में महादेवी ने अनमेल विवाह के प्रसंग में पुरूष और नारी की सामर्थ्य का पूरा आकलन करते हुए कहा है कि "स्त्री जब किसी साधना को अपना स्वभाव और किसी सत्य को अपनी आत्मा बना लेती है, तब पुरूष उसके लिए न महत्व का विषय रह जाता है, न भय का कारण, इस सत्य मान लेना पुरूष के लिए कभी सम्भव नहीं हो सका।"

"दो फूल" रेखा–चित्र में जिस मातृत्व के कारण नारी महान है उसी के कारण वह शोषित भी है। लेखिका का कहना है कि स्त्री अपने बालक को ह्रदय से लगाकर जितनी निर्भय है, उतनी किसी अवस्था में नहीं रहती। वह अपनी संतान की रक्षा के समय जैसी उग्रचण्डी है वैसी और किसी स्थिति में नहीं। इसी से कदाचित लोलूप संसार उसे अपने चक्रव्यूह में घेर कर वाणों से छलनी करने के लिए पहले इसी मातृत्व के कवच को छीनने का विधान कर देता है। यदि ये स्त्रियाँ अपने शिशु को गोद में लेकर साहस से कह सकें कि बर्बरों, तुमने हमारा नारीत्व, पत्नीत्व सब ले लिया पर हम अपना मातृत्व किसी प्रकार नहीं देंगी तो इनकी समस्यायें तुरन्त सुलझ जायेगी। युगों से पुरूष स्त्री को उनकी शक्ति के लिए नहीं, सहनशक्ति के लिए ही दण्ड देता आ रहा है। महादेवी जी के इन शब्दों में पुरूष द्वारा युगों–युगों से होते आ रह नारी के शाषण की गूज तो है ही साथ ही नारी को अपने व्यक्तित्व की शक्तियों को पहचानने का और उनके द्वारा संघर्ष करने का छिपा आह्वान भी है।

नारी के आधारभूत व्यक्तित्व की पहचान करती हुई वे "अबला" रेखा चित्र में विश्लेषण करती हैं कि समाज इन्हें (नारियों को) न जाने कितने दीर्घकाल कितने ही उपायों द्वारा समझाता आ रहा है कि यह माता, पुत्री, पत्नी आदि त्रिगुणात्मक उपाधियों से रहित जीवन मुक्त नारी मात्र है और इनकी इसी मुक्ति से समाज (अर्थात् पुरूष) का कल्याण बंधा हुआ है फिर भी यदि यह अपने (उस) गुरू कर्तव्य से च्युर्त होकर पत्नीत्व मातृत्व आदि सम्बन्धों को चुराती फिरें, तो समाज चुराई हुई वस्तु पर इनका स्वत्व स्वीकार करके क्या अपना विधान ही मिथ्या कर दे? लेखिका का यह व्यंग्य समाज में नारी के प्रति पुरूष के उस व्यवहार की कलई खोलता है कि क्यों वह नारी को मात्र एक मादा के रूप में ही देखना चाहता है और उसके व्यक्तित्व के आधारभूत आयामों–पत्नीत्व और मातृत्व को मान्यता नहीं देता।

महादेवी जी 'बदलू' रेखा चित्र में कहती हैं कि स्त्री माँ का रूप ही सत्य, वात्सल्य ही शिव और ममता ही सुन्दर है। जब वह इन विशेषताओं के साथ पुरूष के जीवन में प्रतिष्ठिता होती है तब उसका रिक्त स्थान भर लेना असम्भव नही तो कठिन अवश्य हो जाता है। तभी तो बदलू रधिया की स्थान पूर्ति की बात सह नहीं पाया और उसने घर बसाने की चर्चा चलाने वाले के सिर पर एक मटकी दे मारी। महादेवी जी हमारे समाज की अत्यन्त दयनीय और पुरूष तथा स्त्री दोनों द्वारा प्रताड़ित अनेक नारियों के चित्र खिंचे है। उन्होंने नारी पर हो रहे कठोर अन्याय को रेखा चित्र किया है और इसी निष्कर्ष पर पहुँची हैं कि पुरूष के प्रति अन्याय की कल्पना से ही सारा पुरूष समाज उस स्त्री से प्रतिशोध लेने पर उतारू हो जाता है और एक स्त्री के साथ क्रूरतम अन्याय का प्रमाण पाकर भी सब स्त्रियाँ उसके अकारण दण्ड को अधिक भारी बनाये बिना नहीं रहती और यह स्त्री पुरूष पर भारी पड़ने लगती है, उसके चुंगल में नहीं आ पाती –"तब जितनी ही वह उनके पहुँच के बाहर होती है, पुरूष उतना ही झुँझलाता है प्रायः झुँझलाहट मिथ्या अभियोगों के रूप में परिवर्तित हो जाती है।"

इस समस्या का समाधान ढूँढते हुए लेखिका कहती है जब तक स्त्री स्वभाव से इतनी शक्तिशाली नहीं होती कि मिथ्या पराभव की घोषणा से विचलित न हो, तब तक उसकी स्थिति अनिश्चित ही रहती है।दरअसल महादेवी जी नारी विकास यात्रा में आनेवाली बाधाओं से पूर्णतः परिचित थीं। वे स्वयं भी पुरूषों के समाज में अपने आधारभूत नारीत्व को विकसित नहीं कर पाई थी। इसलिए उनका नारीत्व के तमाम संकटों और अवसादों से गहराई तक जुड़ाव था। फिर भी उन्होंने नारी के उसकी संकट मुक्ति के लिए कोई मुक्ति संघर्ष छेड़ने का खुला आह्वान नहीं किया, उनके साहित्य में यह अधूरापन झलकता है।

अतः स्पष्ट ही महादेवी जी नारी के व्यक्तित्व के वांछित विकास में आनेवाली बाधाओं की विराटता से उत्पन्न अवसाद ने उन्हें छायावाद की 'नारी भरी बदली' के रूप में करूणामयी कविता लिखने के लिए प्रेरित किया है। गद्य में उनके रेखा चित्रों में उन्होंने नारी की उस पीड़ा के कारणों और परिणामों का विश्लेषण भी प्रस्तुत किया है। निष्कर्षतः महादेवी जी के नारी चिंतन का सार यही हे कि इस संसार को नारी के मातृत्व वात्सलय और ममत्व की आवश्यकता है तथा इनकी पुरूष से रक्षा के लिए उसे स्वयं जागरूकता होना होगा, इतनी शक्तिशाली होना होगा कि वह अपने आधारभूत व्यक्तित्व पर लगने वाले लानछनों और प्रहारों से उठ सके। नारी द्वारा अपनी शक्ति की पहचान न केवल स्वयं के लिए बल्कि पूरी सृष्टि के स्वस्थ पोषण के लिए भी परमावश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, जगदीश्वर चतुर्वेदी, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स, नई दिल्ली।
2. स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधाकुमार, नागरी प्रिंटर्स, दरियागंज, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 2002.
3. भारतीय स्त्री, संपादक प्रतिभा जैन एवं संगीता शर्मा, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1998.
4. भारतीय समाज में नारी आदर्शों का विकास, चन्द्रवली त्रिपाठी, दुर्गावती प्रकाशन, गोरखपुर, 1966.
5. नारी का मुक्ति संघर्ष, डॉ0 अमरनाथ, रेमाधव पब्लिशन्स, नई दिल्लर, 2007.

*****